समीक्षा

2009–2010

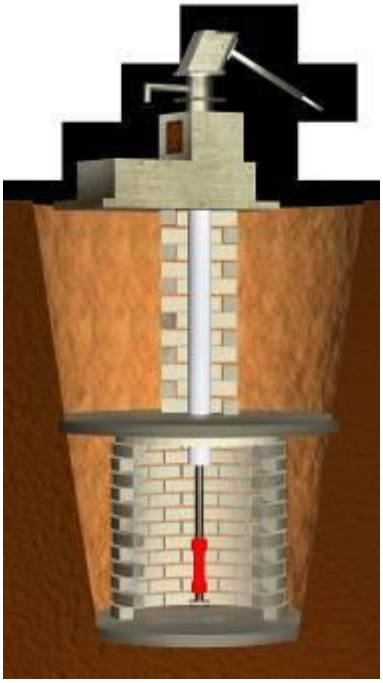

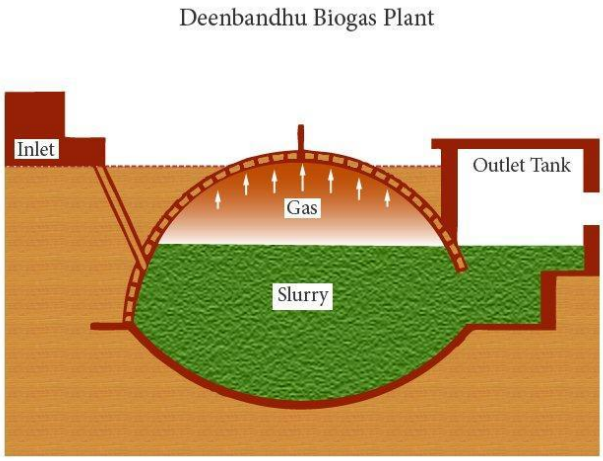

कुमाऊँ कारीगर समिति

ग्राम – कालिका ,पोस्ट आफिस –कालिका , रानीखेत, जिला अल्मोड़ा, पिन –263 645
उत्तराखण्ड ,फोन न. : 05966 – 221516

परिचय

कुमाऊँ कारीगर समिति ग्रामीण नवयुवकों का एक संगठन है। इसका पंजीकरण 6 अक्टूबर 2001 में सोसाइटी रजिस्ट्रेषन एक्ट 1860 ए के अर्न्तगत किया गया हैं।

सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में वैकल्पिक तकनीकि का महत्वर्पूण स्थान हैं। परन्तु प्रषिक्षित एंव कुषल कारीगरों की अवव्यवस्था से उचित क्रियान्वयन न होने के कारण इसका लाभ ग्रामीण समुदायों तक नही पहुँच पाता हैं। इस सोच को मददेनजर रखते हुये कुषल कारीगरों की एक समिति का गठन करने का प्रयास **पान हिमालयन ग्रासरूटस डेवलपमेंट फाउन्डेषन** द्वारा किया गया और **कुमाऊँ कारीगर समिति** का गठन हुआ।

वर्तमान में कुमाऊँ कारीगर समिति एक स्वावलम्बी स्वैच्छिक समिति के रूप में ग्रामीण समुदाय के साथ मिलकर ग्रामीण विकास कार्यक्रमों को क्रियान्वयन कर रही हैं। समिति का कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण उत्तराखण्ड राज्य है ।

समिति का मुख्य कार्यालय ग्राम कालिका, जिला अल्मोड़ा में स्थित हैं। तथा अपने कार्यक्रमों के उचित संचालन एवं समन्वयन हेतु चार अन्य क्षेत्रीय कार्यालय गरूड़, जिला बागेष्वर, सुनोली एवं डौड़ाखाल जिला अल्मोडा, एवं रुद्रप्रयाग में स्थापित किये है। इन क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा समुदाय के साथ समन्वय से उपयुक्त तकनीकि का प्रचार-प्रसार विभिन्न कार्यक्रमों में आवष्यकतानुसार संचालन किया जा रहा है।

लक्ष्य

समुदाय की आवष्यकताओं एव सहभागिता के आधार पर उपयुक्त तकनीकि के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों का सदुपयोग एवं प्रबन्धन कर उनके जीवन स्तर में गुणात्मक सुधार लाना।

उद्देष्य

समुदाय आधारित संगठनों, पंचायतों एवं स्वयं सहायता समूहों को प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन हेतु क्षमता विकास कर, उनकी कार्ययोजना के आधार पर कार्यक्रमों को संचालित करने हेतु प्रेरित करना।

- पारम्परिक जल स्रोतो का संरक्षण करने हेतु ग्रामीण समुदायों को प्रेरित करना।
- पेयजल की समस्या के समाधान के लिए उपयुक्त तकनीकी के कार्यक्रम को अपनाना।
- ग्रामीण क्षेत्रों के जल स्रातो को स्वच्छ रखने हेतु जल गुणवत्ता की जॉच कर स्वच्छ जल पीने हेतु ग्रामीण समुदायों को जागरुक करना।
- जल स्रोतों को दूषित होने से बचाने के लिए पर्यावरणीय स्वच्छता के अन्तर्गत शौचालय निर्माण करने हेतु समुदाय को प्रेरित करना।
- बायोगैस निर्माण के प्रचार से ग्रामीण समुदाय को वैकल्पिक उर्जा का साधन उपलब्ध कर जंगलों पर बढ़ते दबाव को कम करना, एंव जलवायु परिर्वतन/गलोबल वार्मीग में मिथेन गैस के प्रभाव को कम करना।
- जल स्रोतों पर बढ़ते दबाव को कम करने के लिए बरसाती पानी संग्रहण टैंक की तकनीकि से समुदाय को प्रेरित करना।

- जंगलों के अनुचित दोहन एवं प्रबन्धन से पर्यावरण एवं जीवन स्तर पर पड़ रहें दुष्प्रभावों के प्रति लोगो को जागरूक करके गधेरा बचाओं अभियान का संचालन कर जैव विविधता संरक्षण कार्यक्रमों को क्रियान्वयन करना ।
- उत्तराखण्ड के पर्वतीय ग्रामीण क्षेत्रों में कारीगरी/दस्तकारी के माध्यम से स्थानीय नवयुवकों के कौषल में वृद्धि कर स्वरोजगार के अवसर प्रदान करना।
- उपयुक्त तकनीकी के प्रचार प्रसार से सरकारी नीतियों में बदलाव लाने हेतु प्रयास करना।

गधेरा बचाओ अभियान

प्राकृतिक संसाधनों का सामूहिक प्रबंधन उत्तराखण्ड के ग्रामीण जीवन की विषिष्ट पहचान रही है। वर्तमान में जल ,जंगल ,जानवर एवं जमीन के संकुचन से पर्वतीय समुदाय के जीवन शैली एवं आजीविका के स्तर में निरन्तर बदलाव हो रहा हैं। ऐसी स्थिति में सुधार की अपेक्षा तब तक सम्भव नही हैं जब तक कि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं संवर्धन कर उनके तीव्र ह्रास पर अंकुष न लगाया जाये।

पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों का समुदाय के जीवन चक्र से अर्न्तसम्बन्ध को मद्देनजर रखते हुए, अल्मोड़ा जनपद के गगास नदी के जलागम क्षेत्र में गधेरा बचाओ अभियान का क्रियान्वयन पीछले पाँच वर्षो से की जा रही है। जिसका मुख्य उद्देष्य सभी गधेरों में गिरते जल स्तर के प्रतिकूल प्रभावों को, समुदाय की सहभागिता से प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं सर्वधन कर, भविष्य में उनकी आजीविका एवं खाद्य् सुरक्षा में सकारात्मक सुधार करना है। इस घाटी का क्षेत्रफल 500 वर्ग कि0मी0 है जिसमे 373 गॉवों के 23,000 परिवारो की 1,20,000 जनसंख्या रहती है, सम्पूर्ण गगास जलागम में 14 छोटे बड़े मुख्य गधेरे हैं। समीक्षा वर्ष के दौरान इनमे से **दुसाद,कनाड़ी,खीरो,पनाई एंव मालेगाड़** गधेरों में इस अभियान का विस्तृत रूप से संचालन किया गया। इस अभियान के क्रियान्वयन करने का दायित्व समुदाय द्वारा त्रिस्तरीय ढ़ाचे (स्वंय सहायता समूह, गधेरा बचाओ समिति, गधेरा बचाओ मंच) के आधार पर किया जा रहा है। गधेरा बचाओ अभियान को सार्थक, व्यापक एंव निरन्तरता बनाये रखने के लिए, सूखते जल स्रोतों,नौलों,धारों ,गधेरो एंव नदियों को पूर्नजीवित करने के लिए इस वर्ष भी जल दिवस का आयोजन किया गया, जिसमे लगभग 800 लोगो ने प्रतिभाग किया। इस कार्यक्रम के संचालन में दुसाद गधेरा बचाओ मंच की भूमिका सराहनीय रही।

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं संवर्धन कार्यक्रम

कुमाऊँ कारीगर समिति द्वारा गगास जलागम क्षेत्र के 5 गधेरों के लगभग 60 गांवों में पूर्व में गठित समाकेतिक ग्रामीण विकास कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा हैं। इन सभी गधेरों में जल की विकट समस्या को मद्देनजर रखते हुए जलस्रोत संरक्षण एवं संवर्धन कार्य का संचालन किया गया हैं। इस कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए 15 ग्रामीण पौधषालाओं की स्थापना स्वंय सहायता समूह एंव व्यक्तिगत कास्तकारों द्वारा की गई। पौधषालाओं में स्थानीय मॉग के आधार पर चौड़ी पत्ती के लगभग 25 प्रजातियों के 96,000 पौधे तैयार किये गये।

समीक्षा वर्ष के दौरान 15 गधेरा बचाओ समितियों द्वारा कार्ययोजना के आधार पर स्थानीय लोगों की सहभागिता से मानसून के दौरान गॉव की सामूहिक भूमि पर चौड़ी पत्ती के 89,418 चारा, घास एंव झाड़ी प्रजाति के पौधों का रोपण लगभग 370 हैक्टेयर में किया गया एंव व्यक्तिगत भूमि में इन्हीं प्रजातियों के 3,428 पौधों का रोपण किया गया। इसके साथ-साथ शीतकालीन वृक्षारोपण में

218 अखरोट के पौधों का रोपण व्यक्तिगत भूमि पर किया गया। इस प्रकार समीक्षा वर्ष के दौरान समस्त गॉव की सहभागिता से मानसून में कुल 92,846 पौधों का रोपण किया गया। मृदा संरक्षण एवं जल संवर्धन के लिए 50 नये खालों का तथा 522 मी. कन्टूर का भी निर्माण किया गया ।

सामुदायिक वन प्रबन्धन कार्यक्रम के अर्न्तगत दोसाद गधेरा में समुदायिक वन भूमि से घास का उत्पादन भी निरन्तर बढ़ रहा है, इससे जानवरों के लिए चारे की पर्याप्त पूर्ति हो रही है। समीक्षा वर्ष के दौरान दुसाद के 12 गॉव की सामुहिक भूमि से 7,200 गटठा (30 किलो लगभग प्रति गटठा) घास का उत्पादन प्राप्त हुआ। इस घास उत्पादन के वितरण की प्रणाली सभी की सहभागिता को मद्देनजर रखते हुये बनाई गई।

गगास जलागम क्षेत्र में वैज्ञानिक विधि द्वारा समुदाय को जाग्रत करने के लिये समुदाय द्वारा ही वर्षा, तापमान, वाष्पीकरण, एंव गधेरों में जल स्राव मापन करने की प्रक्रिया 10 स्थानों पर निरन्तर चलायी जा रही है। इससे यह गणना की जा रही है कि पुरे जलागम क्षेत्र में कुल हुई वर्षा में से कितना पानी बहा एंव कितना पानी भूमि के अन्दर गया। इससे भविष्य में जमीनी जल स्तर का आकंलन किया जा सकता है।पॉच नौलों एंव एक धारा के जल समेट क्षेत्र में किये गये जल संवर्धन के कार्यो के प्रभाव का मापन भी किया जा रहा है,यदि इसके परिणाम सकारात्मक रहे तो समुदाय को जल सर्म्वधन के प्रति प्रेरित करने में मदद मिल सकती है।

समितियों द्वारा अपने गॉव में बैठकों का आयोजन कर आपसी सामंजस्य से पारदर्षिता पूर्वक निर्णय लिये गये एवं प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग में समानता जैसे मुददों पर विषेष ध्यान दिया गया। सामुदायिक कार्य हेतु समुदाय द्वारा लागत का 20 प्रतिषत अंषदान के फलस्वरुप वर्ष 2009–2010 में रु. 1,10,500 ग्राम कोष का सृजन किया गया।

पेयजल

पर्वतीय क्षेत्रों में वनों के दोहन एवं अनुचित प्रबन्धन से पारम्परिक जल स्रोत, नौलों एंव धारों के सूख जाने से ग्रामीण समुदायों की पेयजल की समस्या दिन प्रतिदिन विकट होती जा रही हैं। इस समस्या को कम करने के लिए कुमाऊँ कारीगर समिति द्वारा रिसावदार कुएँ/हैन्डपम्प का निर्माण एक विकल्प के रूप में किया जा रहा है। इस वित्तीय वर्ष में कुमाऊँ एवं गढ़वाल के विश्न्नि ग्रामीण क्षेत्रों में 43 रिसावदार कुऑ/हैण्डपम्पों का निर्माण उत्तराखण्ड जल संस्थान के सहयोग से किया गया। इसके साथ ही ग्रासरूटस के वित्तीय सहयोग से गगास जलागम में भी 5 रिसावदार कुओं का निर्माण किया गया है। समीक्षा वर्ष के दौरान कुल 48 रिसावदार कुओं का निर्माण किया गया।

इन रिसावदार कुओं के निर्माण से 1030 परिवारों की लगभग 5665 जनसंख्या को पीने के लिए स्वच्छ जल प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम के द्वारा ग्रामीण महिलाओं का पानी लाने पर लगने वाले समय की बचत के साथ–साथ स्वच्छ पानी की उपलब्धता में भी वृद्धि हुई हैं, जिससे परिवार के स्वास्थ पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

भविष्य में हैन्डपम्पों के रख–रखाव हेतु प्रषिक्षण पर्यावरण स्वच्छता एंव स्वास्थ सम्बन्धित जागरूकता कार्यक्रम भी चलाये गये तथा इनका जल स्तर बनाये रखने के लिए जल संवर्धन एंव सरंक्षण के कार्यो की भी लाभार्थीयों को जानकारी दी गई।

समीक्षा वर्ष के दौरान कुमाऊँ कारीगर समिति एंव ग्रासरूटस संस्था के सहयोग से इस कार्यक्रम को उत्तराखण्ड जल संस्थान के साथ जारी रखकर रिसावदार कुँओ का निर्माण किया जा रहा हैं। यह कार्यक्रम भविष्य में समिति के स्वालम्बन के लिए आज तक की सबसे

बड़ी उपलब्धि है। इस कार्यक्रम में जल संस्थान द्वारा विकट जलग्रस्थ ग्रामो की सूची ग्रासरुटस संस्था के माध्यम से कुमॉऊ कारिगर समिति को प्राप्त होती है तदउपरान्त सर्वेक्षण कर सम्भावित स्थानो का चयन कर जल संस्थान को अवगत कराया जाता है। इस प्रकार संस्थान द्वारा निर्गत कुल कार्य आदेषो के सापेक्ष समिति पूर्ण नही कर पा रही है। समिति द्वारा निरन्तर इसे क्रियान्वयन करने का प्रयास किया गया। इस कार्यक्रम को निम्नानुसार क्रियान्वयन किया जा रहा है।

गढ़वाल मण्डल						
क्रम सं0	जिले	डिविजन	विकास खण्ड	सर्वेक्षणग्राम की संख्या	संभावित ग्राम	कार्य पूर्ण ग्राम
1	टिहरी	टिहरी	4	15	12	10
2	पौड़ी	पौड़ी	7	14	09	06
3	पौड़ी	कोटद्वार	5	10	03	02
4	रूद्रप्रयाग	रूद्रप्रयाग	2	35	23	06
5	चमोली	चमोली	5	10	07	06
6	उत्तरकाषी	उत्तरकाषी	3	04	02	0
7	देहरादून	देहरादून	1	1	01	0
		कुल	**27**	**89**	**56**	**30**
कुमाऊँ मण्डल						
1	अल्मोड़ा	अल्मोड़ा	4	5	03	03
2	अल्मोड़ा	रानीखेत	4	11	06	01
3	नैनीताल	नैनीताल	5	7	01	01
4	नैनीताल	श्रामनगर	1	7	06	06
5	बागेश्वर	बागेश्वर	2	12	09	2
		कुल	**16**	**42**	**25**	**13**
गगास जलगम क्षेत्र						**5**
		महायोग	**43**	**131**	**81**	**48**

जल गुणवत्ता जॉच कार्यक्रम

विगत वर्षो की भांति समीक्षा वर्ष के दौरान भी जल गुणवत्ता जाँच का कार्य जारी रहा। चूँकि संस्था मुख्य रूप से जल संवर्धन, पेयजल एवं स्वच्छता का कार्य कर रही हैं एतएंव अपने कार्यक्षेत्र के जल स्रोतो एवं रिसावदार कूओं का प्रतिवर्ष दो बार जल गुणवत्ता जाँच कार्य किया गया हैं। इस वित्तीय वर्ष में 90 गांवों के 206 स्रोतों के 210 नमूनों के जल गुणवत्ता की जाँच की गयी , तत्पष्चात सम्बन्धित समुदाय को इसके परिणाम के बारे में अवगत कराया गया। दूषित जल के निवारण के लिए समुदाय को बैठको के माध्यम से जागरूक किया गया।

उत्तराखण्ड सरकार द्वारा संचालित **राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल गुणवत्ता अनुश्रवण एंव निगरानी कार्यक्रम** के अर्न्तगत स्वजल परियोजना अल्मोड़ा के सहयोग से, जल का महत्व, संरक्षण, दूषित जल से होने वाली बिमारियॉ एंव उनकी रोकथाम,तथा जल गुणवत्ता जॉच के प्रषिक्षण के लिए विकास खण्ड द्वाराहाट की 68 ग्राम पंचायतों में अलग–अलग दो दिवसीय प्रषिक्षण दिया गया, जिसमे 500 प्रतिभागियों ने प्रषिक्षण लिया एंव 300 स्रोतो के नमूनों की जॉच करने का प्रषिक्षण दिया गया। इस प्रकार इस कार्यक्रम के अर्न्तगत सरकार के सहयोग से द्वाराहाट विकास खण्ड के कुल 118 पंचायतो के जन प्रतिनिधियों को प्रषिक्षण देकर इसकी जानकारी प्रदान की गई।

पर्यावरणीय स्वच्छता

पेयजल की गुणवत्ता एवं पर्यावरणीय स्वच्छता को बनाये रखने के लिए ग्रामीण समुदायों को षौचालय निर्माण हेतु प्रेरित किया जा रहा हैं। इसी क्रम में कुमाँऊ कारीगर समिति के कुषल कारीगरों द्वारा ग्रासरुटस से गठबन्धन कर गॉवों में प्रषिक्षण कार्यक्रम चला कर समुदाय को दो गढ्ढों के सोख्ता पिट वाले जलबन्द षौचालयों का निर्माण करने हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा हैं। प्रति शौचालय की कुल लागत का 75 प्रतिषत लाभार्थी का अंषदान रहता हैं। इस समीक्षा वर्ष के दौरान समिति के द्वारा 150 शौचालयों का निर्माण किया गया।

दुसाद गधेरा बचाओ मंच द्वारा सम्पूर्ण दुसाद गधेरा को निर्मल गधेरा बनाने का प्रयास निरन्तर किया जा रहा है, अभी भी इसमे 850 घरों में से लगभग 25 परिवारों को शौचालय व्यवस्था से जोड़ा जाना है। सभी छूटे हुये परिवारों की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर होने से मंच के माध्यम से गधेरा बचाओ समितियॉ अपने–अपने गांव में सहयोग देकर इनके निर्माण के लिए वचनबद्ध है।

वैकल्पिक ऊर्जा

ग्रामीण समुदायों के लिए ईधन हेतु लकडी एंव अन्य संसाधन की उपलब्धता एक समस्या का रूप धारण कर चुकी हैं। जंगलों के संकुचन के कारण महिलाओं और बच्चों को लकड़ी लाने के लिए काफी दूर तक जाना पड़ता हैं, जिससे उनका कार्यभार सोचनीय स्तर पर पहुँच गया हैं ।

दूसरी ओर ईधन हेतु अन्य विकल्पों के कमी से जंगलो पर दबाव भी बढ़ता जा रहा हैं और इस समस्या को मद्देनजर रखते कुमाँऊ कारीगर समिति ने बायोगैस को एक वैकल्पिक उर्जा के रूप में उपयोगी पाया हैं। इस विकल्प से महिलाओं के कार्य बोझ में कमी के साथ-साथ धुएं से होने वाली बीमरियों में भी अंकुष लगा है।

समीक्षा वर्ष में ईधन की समस्या के समाधान हेतु 131 बायोगैस संयंत्रो का निर्माण कुमाऊँ कारीगर समिति के कुषल कारीगरों द्वारा किया गया। प्रति बायोगैस की कुल औसत लागत रू. 16,000 है, जिसमे से लाभार्थी परिवार का अंषदान 60 प्रतिषत है तथा लागत का 40 प्रतिषत उत्तराखण्ड सरकार एवं समिति द्वारा अनुदान दिया जा रहा है। बायोगैस संयत्र के रख–रखाव हेतु कुमाँऊ कारीगर समिति एंव सहयोगी संस्थाओं के कार्यक्षेत्र में समय-समय पर कार्यषाला आयोजित की गई है।

पर्यावरण की द्वष्टि से पूरे विष्व में आज जो ग्लोबल वार्मिग (जलवायु परिर्वतन) की चिन्ता हर मंच में उठाई जा रही है, इस परिर्वतन में मिथेन गैस सबसे अधिक मात्रा में होना एक खतरा बनते जा रहा है। बायोगैस में इसी गैस को ईधन के रूप मे प्रयोग किया जाता है। यदि इस कार्यक्रम को बढ़वा मिलता है तो यह छोटा सा कदम इस ग्लोबल वार्मिग के एक कारक को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगा। इस समस्या को मद्देनजर रखते हुये कुमाऊँ कारीगर समिति भविष्य में भी इस कार्यक्रम को बृहद रूप में फैलाने का प्रयास करती रहेगी। इसी सोच के मद्देनजर भारत सरकार द्वारा बायोगैस संयत्र निर्माण अनुदान राषि को नवम्वर 2009 से बढाकर 1 घन मी. एवं 2 घन मी. के लिए क्रमषःरु. 4000 एवं रु. 10000 कर दिया गया है।

,वर्ष के दौरान वैकल्पिक तकनीकि से लाभान्वित समुदाय/परिवार

क्रम सं.	जिला	ब्लाक	रिसावदार कुऑ	बायोगैस	शौचालय
1	अल्मोड़ा	द्वाराहाट		36	115
		ताड़ीखेत	01	01	31
		भैंसियाछाना	02		
		धौलादेवी	01		
		लमगडा	06	03	
		सल्ट			
		हवालबाग			04
2	नैनीताल	कोटाबाग		24	
		भीमताल		10	
		धारी		04	
		ओखलकाण्डा	01		
		रामनगर		23	
3	बागेश्वर	गरूड़	02	04	
		कपकोट		06	
4	टिहरी गढ़वाल	चम्बा	03		
		नरेन्द्र नगर	07		
5	पौड़ी	वीरोखाल	02		
		पावौ	02		
		एकेष्वर	01		
		कलजीखाल	01		
		जेहरीखाल	02		
6	रूद्रप्रयाग	जखोली	04		
		अगस्तमुनी	02		
7	चमोली	पोखरी	02		
		गैरसैण	01		
		थराली	02		
		देवाल	01		
8	देहरादून	विकासनगर		03	
		सहसपुर		17	
9	गगास जलागम में	द्वाराहाट	05		
	जिले 8	**ब्लाक–29**	**48**	**131**	**150**

सहयोगी सस्थाओं द्वारा उपयुक्त तकनीकि का प्रचार एवं प्रसार

कुमाऊँ कारीगर समिति द्वारा उपयुक्त तकनीकी का प्रचार ,प्रसार एवं रख रखाव हेतु कुमाऊँ एवं गढ़वाल में 03 सहयोगी संस्थाओं के साथ मिलकर पिछले पॉच वर्षो में वैकल्पिक तकनीक के कार्यक्रम चलाये जा चुके हैं। समीक्षा वर्ष के दौरान कुमाऊँ कारीगर समिति द्वारा इनके रख– रखाव पर ज्यादा ध्यान दिया गया है। विषेषकर बायोगैस संयत्र को क्रियाषील रखना एक चुनौती भरा कार्य है। अपने वरिष्ठ कारीगरों को सहयोगी संस्थाओं में भेजकर लाभर्थीयों का यूजर कार्यषाला आयोजित की गई, जिसमे लगभग 300 घरों में जाकर गोबर गैस के रख–रखाव के सर्वेक्षण का कार्य किया गया। सर्वेक्षण में लगभग 95 प्रतिषत संयत्र पूर्णतः क्रियाषील थे।

डब्लू0डब्लू0 एफ0 (व्लर्ड वाईड फंड)

विगत वर्ष की भाति ग्रासरूटस संस्था एवं डब्लू0डब्लू0 एफ0 संस्था, रामनगर, जिला नैनीताल के कोटाबाग एंव रामनगर के नजदीक बसे गांवों में वन्य जीव से खतरा कम करने एंव संरक्षण के लिए गोबर गैस संचालन हेतु द्वितीय वर्ष में भी अनुबन्ध किया गया है। द्वितीय चरण में 47 गोबर गैस संयत्रों का निर्माण पूर्ण कराया गया। 42 गोबर गैस संयत्रों का निर्माण एक ही गांव मनकन्ठपुर में किया गया।इनके रख'–रखाव के लिए गोबर गैस यूजर कार्यषाला का भी आयोजन किया गया। इन क्षेत्रों में बायोगैस संयत्रों की उपयोगिता को देखते हुये भविष्य में भी इस संस्था के साथ गोबर गैस कार्यक्रम के संचालन की संभावना है।

के.वी.आइ.सी. (खादी ग्रामोउद्योग आयोग)

समीक्षा वर्ष के दौरान जिला देहरादून में खादी ग्राम उद्योग आयोग के साथ जनवरी 2009 में अनुबन्ध किया गया है जिसमें 20 गोबर गैस संयत्रों का निर्माण विकास खण्ड सहसपुर एवं विकास नगर में पूर्ण कर लिया गया है एवं भविष्य में भी इस कार्यक्रम को जारी रखा जायेगा।

क्षमता विकास कार्यक्रम

ग्रामीण नवयुवको को वैकल्पिक तकनीकि में प्रषिक्षण देकर उन्हें एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में तैयार करना कुमाऊँ कारीगर समिति का एक मुख्य उद्देष्य हैं, जिसके फलस्वरूप वर्तमान में 50 कारीगरों का यह समूह कार्यरत है। यह समूह विभिन्न हुनर के आधार पर एक कारीगरी श्रेणी के रूप में गठित है। कुमाऊँ कारीगर समिति में बहुत से कारीगर है जिन्होने अपनी जिन्दगी की शुरूआत एक प्रषिक्षणार्थी के रूप में की थी, आज उनके पास हाथ का एक हुनर है जिससे वे अपनी अच्छी आजीविका चला रहें है। समिति द्वारा पीछले 8–9 वर्षा में लगभग 22 आजीवन सदस्य प्रषिक्षित होकर अपने दूसरे कार्यो में जुड गये एवं इस प्रकार लगभग 150 नवयुवक प्रषिक्षण लेकर आज अपना रोजगार कर अपने पैंरो पर खडें हो चुके है।

उत्तराखण्ड जल संस्थान के साथ पीछले दो वर्षो के कार्य के दौरान गढवाल मण्डल में 76 रिसावदार कुओं का निर्माण किया गया जिसमें वहा के लगभग 15 नवयुवको को इस कार्य में प्रषिक्षत किया जा रहा है ताकि भविष्य में ये नवयुवक प्रषिक्षित होकर गढवाल मण्डल में इस पेयजल के विकल्प को आगे बड़ा सके। संलग्न सूची के आधार पर निम्नानुसार कारीगरो को विभाजित किया गया है।

क्र.सख्या	कारीगरो के नाम	हैण्डपम्प	गौवरगैस	षौचालय	बरसाती टेंक	जल गुणवत्ता जॉच	अन्य
1	विजय सिह	√	√	√	√		
2	गोपाल राम 1	√	√	√	√		
3	गोपाल राम 2	√	√	√			
4	आन्नद राम		√	√	√		
5	जगदीष चन्द्र		√	√	√		
6	महेन्द्र सिंह	√		√	√		
7	खीमानन्द 1		√		√		
8	खीमानन्द 2	√					
9	गोपाल राम 3	√			√		
10	प्रमोद कुमार	√			√		
11	पान सिंह	√					
12	मोहन राम	√			√		
13	जीवन सिंह	√	√	√	√		
14	चन्दन राम		√	√	√		
15	ष्षोवन सिंह	√		√	√		
16	प्रकाष चन्द्र	√	√	√	√		
17	विरेन्द्र कुमार	√				√	√
18	किषन चन्द्र	√	√	√	√		
19	दिनेष चन्द्र	√			√		
20	रमेष चन्द्र	√	√	√	√		
21	डिगर राम	√					
22	दिनेष चन्द्र बुधोडी	√	√				
23	पनी राम	√	√	√	√		
24	महेष चन्द्र		√	√	√		
25	कैलाष सिंह		√				
26	पवन		√	√			
27	राजेन्द्र		√	√			
28	दयानन्द	√					
29	नन्द किषोर	√	√	√	√		
30	राजेन्द्र डोवा	√	√	√	√		
31	भुवन डोवा	√					
32	सुरेष लाल	√		√	√		
33	आन्नद कुमार					√	√
34	महेन्द्र सिंह						√
35	ईष्वर सिंह				√		√
36	वीर सिंह	√				√	√
37	राम सिंह	√					√
38	हरीष सिंह	√					√
		27	19	19	22	3	7

इसी क्रम में समय–समय पर क्षमता विकास हेतु प्रषिक्षण षिविरों का भी आयोजन किया गया जिनमें समिति के सभी सदस्यों ने भाग लेकर काफी अच्छे अनुभव प्राप्त किये।

समीक्षा वर्ष के दौरान प्रषिक्षण कार्यक्रमों की तालिका निम्नवत है :

दिनॉक	विषय	स्थान / आयोजक	प्रतिभागी सं0
19 अप्रेल 25 अप्रेल 2009	लैह में वायोगैस तकनीकि की जानकारी	लेह / लेडेग	01
31 मई 2 जून 2009	जल विज्ञान हेतू एक्वाडेम के साथ	दुसाद , कालिका	07
18 जून 09	रिसावदार कुऑ हेतू बैठक	नैनी	10
23 जून 09	बायोगैस तकनीकि हेतु सी.डी.ओ. के साथ	अल्मोडा	02
6 – 9 जुलाई 09	रिसावदार कुऑ हेतू	सल्ट एवं गढवाल क्षेत्र	05
26–30 अगस्त 09	गोबर गैस यूजर कार्यषाला	हिमाचल प्रदेष	05
17 सितम्बर 2009	कुमॉऊ कारीगर समिति ए0जी0 बी0एम0	कालिका	30
18 सितम्बर 2009	कुमॉऊ कारीगर समिति स्टाफ बैठक क्षमता विकास हेतू	कालिका	12
03 अक्टूबर 2009	मनरेगा प्रषिक्षण हेतू	ताडीखेत	02
03 अक्टूबर 01 नवम्बर 2009	गोबर गैस यूजर कार्यषाला	हिमाचल प्रदेष	03
26 नवम्बर 09	गोबर गैस यूजर कार्यषाला (डब्लू0 डब्लू0 एफ0 रामनगर)	डब्लू0 डब्लू0 एफ0 रामनगर	6
02 दिसम्बर 09	जल विज्ञान हेतू (धन सिह के साथ)	दुसाद , कालिका	05
21–27 दिसम्बर 09	गोबर गैस यूजर कार्यषाला	हिमाचल प्रदेष	06
12 जनवरी 10	रिसावदार कुऑ हेतू बैठक	कालिका	04
22 जनवरी 10	कुमॉऊ कारीगर समिति एवं हिमाचल टीम सयुक्त क्षमता विकास कार्यषाला	नैनी	18
13 फरवरी 10	गोबर गैस यूजर कार्यषाला	विमर्ष नैनीताल	04

संस्थागत एवं वित्तीय प्रबन्धन

समीक्षा वर्ष के दौरान कुमाऊँ कारीगर समिति को वैकल्पिक तकनीकि के प्रचार प्रसार , जल संवर्धन कार्यक्रम एवं संस्थागत क्षमता की वृद्धि का अवसर एवं चुनौती – सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट मुम्बई एंव ग्रासरूटस के वित्तीय सहयोग से प्राप्त हुआ।

आभार

समिति वित्तीय संस्था सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट, उत्तराखण्ड शासन, ग्रासरूटस, महिला उमंग समिति, सहयोगी संस्थायें, दुसाद गधेरा बचाओ मंच, गधेरा बचाओ समितियॉ, महिला संगठनों, मित्रों, सभी

सदस्यों, आडिटर दिपक घनसानी एण्ड एसोसीऐटस तथा समस्त क्षेत्रीय जनता का आभार प्रकट करती हैं, जिनका अमूल्य सहयोग एवं मार्ग दर्षन हमें निरंतर आगे बढ़ने एवं कार्य करने की प्रेरणा देता हैं।

समिति प्रगति रिपोर्ट संचित में

क्रम.स	कार्यक्रम	2009–10	आज तक
1	पेयजल रिसावदार कुएँ (कुमॉऊ कारीगर समिति) पेयजल रिसावदार कुएँ (उ0ज0स0) कुल निर्मित रिसावदार कुएँ सर्वेक्षण ग्राम सम्भावित • लाभार्थी परिवार • लाभार्थी जनसंख्या	5 43 48 131 81 1030 5665	262 93 355 272 159 7,810 42,955
2	शौचालय (लाभान्वित परिवार)	150	1712
3	बायोगैस संयंत्र (लाभान्वित परिवार)	131	1012
4	बरसाती जल संग्रहण टैंक • लाभान्वित परिवार • लाभान्वित स्कूल	– –	260 15
5	प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं संवर्धन • वृक्षा रोपण (जंगली प्रजाति) • फलदार पौधरोपण • खाल • कन्टूर ट्रेन्च (मीटर) • पौधषाला • चैकडैम • चैकवाल	92,846 5,760 50 522 – – –	3,65,637 18,017 537 14,486 15 9 40
6	स्वयं सहायता समूह	–	75
7	गधेरा बचाओ समिति	–	26
8	गधेरा बचाओ मंच	–	2
9	सहयोगी संस्थाऐं	–	15

सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में किये गये व्यय का विवरण

अ. उपयुक्त तकनीकि कार्यक्रम

क्रम. सं.	कार्यक्रम	खर्च विवरण (रू. लाख में)
1	पेयजल	25.90
2	वैकल्पिक उर्जा	1.30
3	प्राकृतिक संसधानो का संरक्षण एंव सर्वधन	7.00
	कुल	**34.20**
ब. प्रषासनिक		
1	मानदेय	2.20
2	कार्यालय किराया टेलीफोन, स्टेषनरी इन्षोरेन्स ओडिट	0.23 0.14 0.60 0.16
3	यात्रा व्यय	0.13
4	टूल किट	0.21
5	अन्य	0.28
	कुल	**3.95**
	कुल योग (अ+ब)	**38.15**

प्रबन्ध कारिणी समिति

1.	श्री अर्जुन षाह	अध्यक्ष	रानीखेत , अल्मोड़ा
2.	श्री पूरन राम	सचिव	चोपड़ा ,नैनीताल
3.	श्री आन्नद सिंह	कोषाध्यक्ष	नैनी , अल्मोड़ा
4.	कर्नल वी.पी.सिंह	सदस्य	कालिका, अल्मोड़ा
5.	श्री कल्याण पाल	सदस्य	कालिका, अल्मोड़ा
6.	श्रीमती सुनीता कष्यप	सदस्य	कालिका, अल्मोड़ा
7.	श्री जगदीष भण्डारी	सदस्य	नैनीताल

कुमाऊँ कारीगर समति

आजीवन सदस्य

क्रम. सं	सदस्यों के नाम	गॉव	जिला
1	पूरन राम	चोपड़ा	नैनीताल
2	जीवन सिंह	चोपड़ा	"
3	मोहन राम	चोपड़ा	"
4	किशन चन्द्र	चोपड़ा	"
5	नन्द किशोर	चोपड़ा	"
6	गोपाल राम – 1	चोपड़ा	"
7	कैलाश चन्द्र	चोपड़ा	"
8	प्रकाश चन्द्र	चोपड़ा	"
9	मोहन चन्द्र	चोपड़ा	
10	गोपाल राम – 2	सिरसा	"
11	विजय सिंह	सिरसा	"
12	सुरेश लाल	सिरसा	"
13	रमेश चन्द्र	सिरसा	"
14	रमेश चन्द्र दानी	सिरसा	"
15	गोपाल राम – 2	सिरसा	"
16	पनी राम	कूल	"
17	महेश चन्द्र	कूल	"
18	खीमा नन्द	कूल	"
19	दिनेश चन्द्र	कूल	"
20	डिगर राम	कूल	"
21	सोबन सिंह	जाजर	"
22	प्रमोद कुमार – 2	छतोला	"
23	जगदीश भण्डारी	नैनीताल	
24	महेन्द्र सिंह	मलौना	अल्मोड़ा
25	चन्द्रन राम – 1	मौना	"
26	राजेन्द्र कुमार	डोबा	"
27	पान सिंह	दमतोला	"
28	विरेन्द्र कुमार	"	"
29	जगदीश चन्द्र	"	"
30	आनन्द राम	"	"

31	खीमा नन्द	"	"
32	राम सिंह	दुभना	अल्मोडा
33	बी0 पी0 सिंह	कालिका	नैनीताल
34	दिनेष चन्द्र	सल्टना	अल्मोडा
35	पवन कुमार	देहरादून	देहरादून
36	राजेन्द्र सिह	देहरादून	देहरादून
37	नवीन चन्द्र उपाध्याय	सौनी	अल्मोडा
38	ललित रावत	दुभना	अल्मोडा
39	मुकेष कुमार	मल्ला नौगॉव	"
40	भुपाल राम	"	"
41	भुवन सिह रावत	दुभना	अल्मोडा
42	राम सिंह	मनचोडा	"
43	घन ष्याम	बदया	"
44	उमेष	"	"
45	हीरा सिंह	खुडोली	नैनीताल
46	दया नन्द	चौपडा	नैनीताल
47	कमल कुमार	छतोला	नैनीताल
48	योगेष चन्द्र जोषी	चोपड़ा	
49	शंकर राम	गिनाई	"
50	महेन्द्र सिंह	बोहरागॉव	"
51	अर्जन शाह	रानीखेत	"
52	कल्याण पौल	कालिका	"
53	सुनीता कष्यप	कालिका	"